

Home > Reader Blog > Others

वेद: वेदों का कोई भी मंत्र अश्लील नहीं- जागरण जंक्शन मंच


सद्गुरुजी

आदमी चाहे तो तकदीर बदल सकता है, पूरी दुनिया की वो तस्वीर बदल सकता है, आदमी सोच तो ले उसका इरादा

क्या है?

534 Posts | 5673 Comments



वेद: वेदों का कोई भी मंत्र अश्लील नहीं- जागरण जंक्शन मंच आश्रम से जुड़ी हुई एक लड़की कुछ साल पहले एक विदेशी महिला को लेकर मेरे पास आई थी। इंग्लैंड की रहने वाली वो विदेशी महिला हिंदी पढ़ी थी, इसलिए वो अच्छी हिंदी जानती थी। वो शादीशुदा नहीं थीं और ईसाई मिशनरी से जुड़कर धर्म प्रचार के कार्य में लगी हुई थीं। उसने आते

Topic Of The Week



लिखें ब्लॉग
अफगानिस्तान के
मौजूदा हालात से
क्रिकेट पर पड़ने



किसान आंदोलन
पर क्या सोचते हैं
आप ब्लॉग में लिखें
अपने विचार



आईपीएल 2020 पर
क्या हैं आपके विचार
लिखें ब्लॉग लोगों
तक पहुंचाएं



अभिनेता सुशांत की
मौत के पीछे की
क्या कहानी है और
कोन जिम्मेदार है



मोदी सरकार के 4
साल पूरे इसपर क्या
हैं आपके विचार
लिखें ब्लॉग



पीएम की चीन यात्रा
पर क्या है आपके
विचार लिखें ब्लॉग

Most Read Blogs


SPORTS

साउथ अफ्रीका टूर में वनडे
की कप्तानी करेंगे रोहित

 9 December
2021

 71905
Views

SPORTS

12 साल पहले खेला गया था
825 रन वाला ऐतिहासिक

 15 December
2021

 54108
Views

This website uses cookie or similar technologies, to enhance your browsing experience and provide personalised recommendations. By continuing to use our website, you agree to our [Privacy Policy](#) and [Cookie Policy](#). [OK](#)

इजाजत मांगी। वो मुझे अपने धर्म की अच्छाइयाँ बताकर प्रभावित करना चाहती थीं।



मयंक अग्रवाल की टेस्ट रैंकिंग में लंबी छलांग आर

8 December
2021

12956
Views

लगभग दो घंटे तक चली चर्चा के दौरान उसने हिन्दू धर्म पर कई आरोप लगाये। उसके सारे आरोपों के जबाब मैंने इस तरह से दिए कि वो खामोश हो गई, अंत में वो थकहारकर गहरी साँस खींचते हुए वेदों में अश्लीलता की चर्चा छोड़ दी। वो शास्त्रार्थ की पूरी तैयारी करके आई हुई थी। अपने थैले से दो पुस्तकें निकाली और फिर एक पुस्तक खोलकर मेरे सामने रख दी। यजुर्वेद की दो ऋचाएँ पूर्णतः गलत व्याख्या सहित उसने इस प्रकार से उद्धरित की गई थीं-

यकास्कौ शकुन्तिकाहागीती वंचती। आ हन्ति गमे निगाल्गालिती धारका॥ (यजुर्वेद 23-22) अर्थात् - पुरोहित कुमारी-पत्नियों से उपहास करते हैं। पहला पुरोहित कुमारी (लड़की) की योनि की ओर संकेत करके कहता है कि जब तुम चलती हो तो योनि से 'हल-हल' की ध्वनी निकलती है, मानो चिड़ियाँ चहक रही हों। जब योनि में लिंग प्रवेश करता है, तब 'गल-गल' की ध्वनि निकलती है।

यकोस्कैउ शकुन्तक आहाल्गीती वन्चती। विवाक्ष एव ते मुखाम्भयों पा नस्त्वंभी भाष्या॥ (यजुर्वेद 23/23) अर्थात् - वे पुरोहित के लिंग की ओर संकेत करके कहती हैं कि हे पुरोहित, तुम्हारे मुँह से 'हल-हल' की ध्वनि निकलती है, जब तुम बोलते हो, तुम्हारा लिंग तुम्हारे मुँह के ही समान है, क्योंकि इसमें भी छेद है अतः तुम हम से जबान न चलाओ। तुम भी हमारे जैसे ही हो।

पढ़कर मैं हंसने लगा। उसे मेरे हंसने का अर्थ समझ नहीं आया तो मैं बोला- 'जिसने भी वेदमंत्रों की ये व्याख्या की है वो सत्य से परिचित नहीं है। उसे इन मंत्रों का असली अर्थ भी नहीं मालूम है। इन वेदमंत्रों का असली अर्थ जानने के लिए 'बृहदारण्यकोपनिषद्' का ये श्लोक पढ़ना और उसका अर्थ जानना जरूरी है।

योषा वा अग्निगौतम तस्य उपस्थ एव सम्मिलोमानि धूमो योनिरर्चिर्यदन्तः करोति तेऽन्यारा अभिनन्दा विस्फुल्लिन्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा देता जुह्वति तस्या आहुत्यै पुरुषः सम्भवति. योषा वाव गौतामाग्निस्तस्या उपस्थ एव समिधदुपमंत्रयते सधूमो योनिरर्चिर्यदन्तः करोति तेऽन्यारा अभिनन्दा विस्फुल्लिङ्गाः. तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा देतो जुह्वति तस्या आहुतेर्गर्भः सम्भवति (बृहदारण्यकोपनिषद् 6/2/13)

इस मंत्र का अर्थ है कि स्त्री अग्नि है, पुरुष का लिंग समिधा है, स्त्री का गुप्तांग ही ज्वाला है, उसका आकर्षण ही धूम है, उसमें प्रवेश ही अंगार है, आनंद ही चिंगारी है और रेत ही आहुति है। इस उपनिषद् के अनुसार वेदों में स्त्री शब्द का प्रयोग अग्नि के लिए किया गया है। पुरुष के लिंग का अर्थ है समिधा यानी वह लकड़ी जिसे जलाकर यज्ञ किया जाता है अथवा जिसे यज्ञ में डाला जाता है। स्त्री गुप्तांग या योनि शब्द का आशय हवन कुण्ड की धधकती हुई अग्नि से है। धूम यानी धुँआ का अर्थ आकर्षण है। स्त्री में प्रवेश करने का अर्थ अंगार है। आनंद का अर्थ चिंगारी है और रेत का अर्थ आहुति है।



BOLLYWOOD

Netflix की टॉप 10 लिस्ट में 4 भारतीय फिल्में

7 December
2021

10915
Views



BOLLYWOOD

पर्दे पर आएगी सुशांत सिंह राजपूत की फिल्म 11

15 December
2021

9302
Views



उपनिषदों में ऋषियों ने वेदों के अलंकारिक और प्रतीकात्मक शब्दों की विशद रूप से व्याख्या की है, ताकि वेदमंत्रों का सही अर्थ समझा जा सके। वेद का कोई भी मंत्र अश्लील नहीं है। हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिए विधर्मियों द्वारा जानबूझकर ये प्रचार किया जाता है कि वेदों में अश्लीलता भरी पड़ी है। आप बृहदारण्यकोपनिषद के उपयुक्त श्लोक को समझकर वेद के किसी भी मंत्र का अर्थ समझेंगे तो आपको कोई भी मंत्र अश्लील नहीं मिलेगा। मैंने उस विदेशी महिला को उन वेदमंत्रों का इस प्रकार से सही अर्थ समझाया-

यकास्कौ शकुन्तिकाहागीती वंचती। आ हन्ति गमे निगाल्गालिती धारका॥ (यजुर्वेद 23-22) अर्थात् पुरोहित लड़कियों और पत्नियों से बात करते हैं। पहला पुरोहित हवनकुंड की धधकती हुई ज्वाला की तरफ संकेत करके कहते हैं कि जब ये चलती है यानी जलती है तो 'हल हल' की ऐसी ध्वनि निकलती है, मानों चिड़िया चहक रही हो। जब धधकती हुई ज्वाला में समिधा यानी लकड़ी डाली जाती है तो 'गल गल' की ध्वनि निकलती है।

आप हवन करते समय जलती हुई लकड़ी और धधकती हुई ज्वाला की आवाज पर गौर कीजिये, आपको बिलकुल यही आवाज सुनाई देगी। वेद न सिर्फ सच्चे बल्कि पूर्णतः वैज्ञानिक भी हैं। त्रिफिथ, मैक्स मूलर और विलियम्स जैसे विदेशी विद्वान वेदों का सही अर्थ समझ ही नहीं पाये। हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिए और हिन्दुओं को भ्रमित करके उन्हें धर्मांतरण के लिए प्रेरित करने के लिए ही उन्होंने वेदों के मंत्रों का अर्थ से अनर्थ कर उसमें झूठी और मनगढ़ंत अश्लीलता दिखाई।

उन्हीं के किये हुए उलजुलूल अनुवादों की नक़ल करके हमारे देश के भी कई लेखकों ने हिन्दू धर्म को जानबूझकर देश-विदेश में अपमानित किया है और हिन्दुओं को भ्रमाने का घृणित और बेहद निंदनीय कार्य किया है। अब उनकी नक़ल करके बहुत सारे लोग हिन्दू धर्म और वेदों के बारे में मीडिया पर झूठा दुष्प्रचार कर रहे हैं। सत्य लोगों तक पहुंचाया जाना अब बेहद जरूरी हो गया है, ताकि हिन्दू भाई झूठे और मनगढ़ंत दुष्प्रचार से भ्रमित न हों। मैंने दूसरे मंत्र की भी सही व्याख्या इस प्रकार से उस विदेशी महिला को समझाई-

निकलती है, जब बोलते हो यानी मंत्र पढ़ते हो। आपकी छिद्रयुक्त समिधा भी आपके मुंह के समान ही है। अर्थात ये भी धधकती हुई अग्नि में जाने पर 'हल हल' की ध्वनि करती है। अब हमलोगो की तरह अधिक वातालाप मत करो। इसका अर्थ है कि अग्नि तैयार है, अतः यज्ञ शुरू करो।

इन वेदमंत्रों के सही अर्थ जानकर वो विदेशी महिला बहुत संतुष्ट और प्रसन्न हुई, परन्तु जाते जाते आखिर में एक आरोप लगा गई, 'सर.. आप माने या न माने, पर आपके हिन्दू धर्म में 'स्किन प्रॉब्लम' (छुआछूत) बहुत है।' साथ आई लड़की, जो वर्षों से मेरे आश्रम में आ रही थीं, उसकी तरफ इशारा करते हुए बोली- 'सर.. ये लड़की दलित परिवार की है.. बहुत गरीब है.. काले रंग की होने के कारण कोई इससे शादी करने को तैयार नहीं है.. अब आप ही बताइये कि ये क्या करे?'

उस समय तो एक गहरी साँस खींचकर मैं चुप रहा, किन्तु बाद में कुछ लोगों के जरिये कोशिश किया कि उसकी शादी कहीं लग जाये, परन्तु इस कार्य में कामयाबी नहीं मिली। दो तीन महीने के बाद एक दिन वो लड़की कार से आई, उसके साथ उससे दुगुनी उम्र का एक अंधे भी था। उसने परिचय कराया, 'गुरुजी, ये मेरे पति हैं।' मुझे अच्छा तो नहीं लगा, परन्तु शिष्टाचार निभाते हुए उसे बधाई दिया। बातचीत के दौरान तब मैं बहुत दुखी हुआ, जब मुझे पता चला कि वो अब ईसाई बन चुकी है।

मुझे दो साल बाद एक दिन पता चला कि उसका पति गुप्तरोगी है, वो अपनी पत्नी से यौन-संबंध कायम करने में सक्षम नहीं है, अतः वो बाप नहीं बन सकता है। मेरी सलाह पर उसने एक बच्चा गोद ले लिया। बच्चा उसे सरलता से मिल गया, क्योंकि ईसाई संस्थाएं ईसाई लोगों को यहाँ वहाँ फेंके हुए मिले बच्चे गोद देने में ज्यादा रुचि लेती हैं, क्योंकि इस तरह से धर्मांतरण सरलता से हो जाता है। दोष हिन्दुओं का भी है वो गरीब, दलित और लावारिश बच्चों को गोद लेने में जल्दी रुचि नहीं लेते हैं।

कुछ ही समय बाद उस लड़की का ईसाई पति गुजर गया। सास ने सारी जायदाद से उसे बेदखल कर दिया। अब वो मुकदमा लड़ रही है। किसी भी ईसाई संस्था ने उसकी कोई मदद नहीं की। वो दो चार महीने के बाद अक्सर अपने गोद लिए हुए बच्चे को लेकर मेरे पास आती है और रोती पछताती है। उसे देखकर मैं हमेशा यही सोचता हूँ कि इस बिचारी को धर्मान्तरण से क्या मिला? ईसाई धर्म-प्रचारकों के के बहलावे फुसलावे और झूठे सपने दिखाने के लालच में न फँसती तो आज कहीं ज्यादा सुखी होती। जब भी वो आशीर्वाद मांगती है तो एक गहरी साँस खींचकर हमेशा उसे बस यही आशीर्वाद देता हूँ, "ईश्वर तुम्हारी मदद करें।"

(आलेख और प्रस्तुति= सद्गुरु श्री राजेंद्र ऋषि जी, प्रकृति पुरुष सिद्धपीठ आश्रम, ग्राम- घमहापुर, पोस्ट-कन्दा, जिला- वाराणसी। पिन-221106)

TAGS:

वेद का कोई भी मंत्र अश्लील नहीं है

Read Comments



एल.एस. बिष्ट

सद्गुरु जी अभिवादन। मन खुश हो गया इस लेख को पढ़ कर। वेदों और मंत्रों पर तथा गलत समझ के कारण उठे विवादों पर आपने इतना अच्छा लिखा है कि लेख को तीन बार धीरे धीरे पढ़ा जिससे पूरी तरह समझ में आ सके। धार्मिक विषयों पर आपका लेखन बेजोड़ है। अति सुंदर लेखन। सादर, सप्रेम।

Reply

This website uses cookie or similar technologies, to enhance your browsing experience and provide personalised recommendations. By continuing to use our website, you agree to our [Privacy Policy](#) and [Cookie Policy](#).